पूर्वी राजस्थान का इतिहास और संस्कृति

(जन चेतना, कला, साहित्य, समाज और संस्कृति)

डॉ. फूलसिंह सहारिया

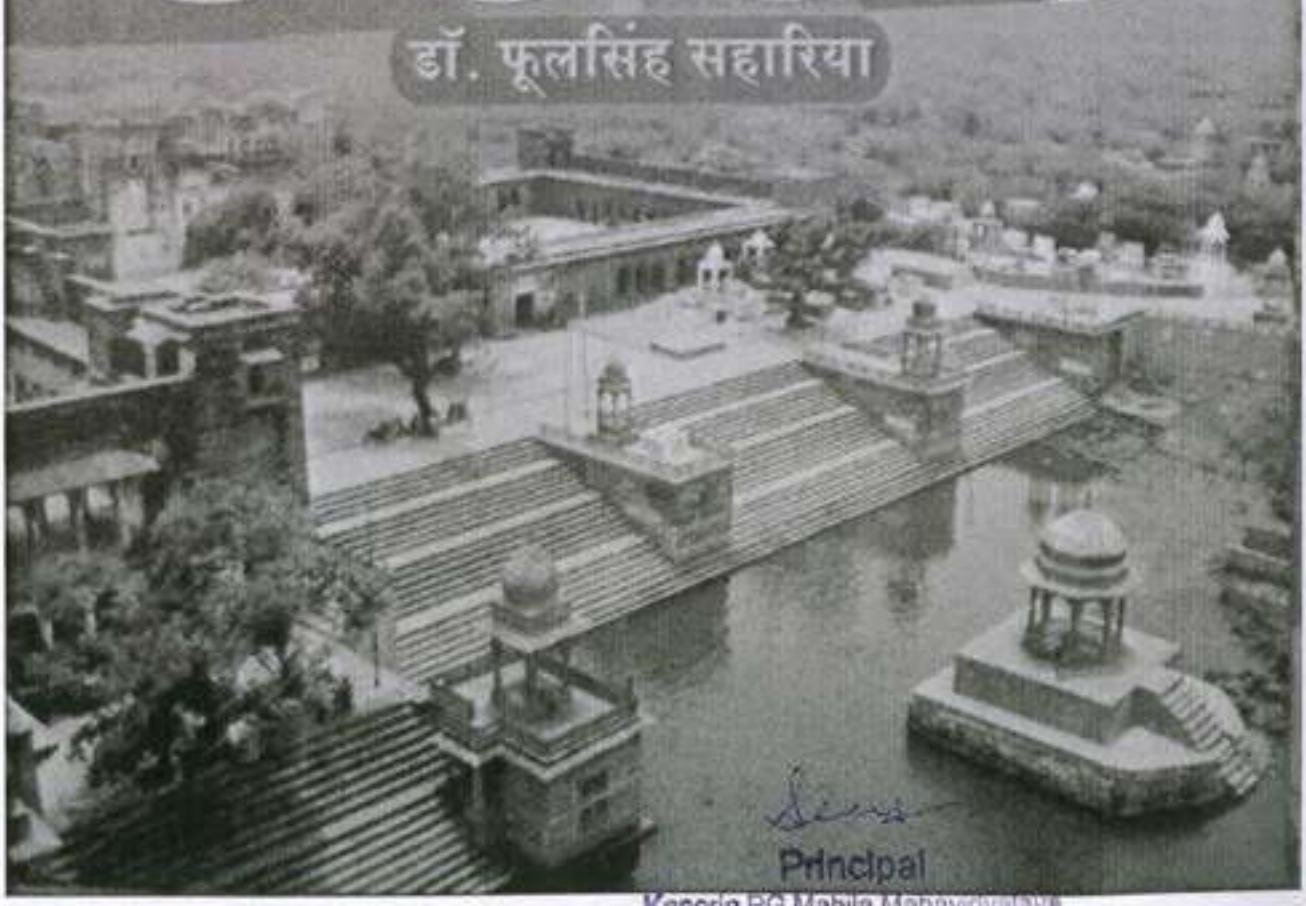

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR
Scanned with CamScanner

प्रकाशक
गौरांग अग्रवाल
गौरांग प्रकाशन
लालजी सांड का रास्ता
चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003

© सम्पादकाधीन

ISBN: 978-93-82874-26-3

प्रथम संस्करण : जनवरी 2018

मूल्य : 400.00 रुपए मात्र

लेजर टाइपसैटिंग :
कीर्ति कम्प्यूटर, अलवर

मुद्रक :
शीतल ऑफसेट, जयपुर

पाठक की सन्तुष्टि उत्कृष्ट साहित्य से होती है और प्रकाशक इस अपेक्षा को पूरा करता है। विचारपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य के लिए प्रकाशक गत कई वर्षों से प्रयासरत रहा है। नवसृजित कृति (पाण्डुलिपि) के प्रकाशन हेतु अच्छे लेखक आमन्त्रित हैं।

—प्रकाशक

वैधानिक चेतावनी

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री, भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत लेखक तथा प्रकाशक के पास सुरक्षित है। उनकी अनुमति के बिना इस पुस्तक का नाम, टाइटल-डिजाइन, अन्दर के मैटर आदि का आंशिक या पूर्ण रूप से उपयोग अथवा यथावत् या तोड़-मरोड़कर एवं किसी भी भाषा में छापने एवं प्रकाशित करने या किसी तकनीक द्वारा स्टोर करने, कापी करने या सम्प्रेषण करने वाले पर उचित कानूनी कार्यवाही की जाएगी एवं वह हर्जे-खर्चे व हानि के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा।

पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक व प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी कुछ गलतियाँ रह जाना सम्भव है, जिसके लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं लेखक जिम्मेदार नहीं होंगे, जिल्द (बाईन्डिंग) व मुद्रण की गलती के कारण रह गई त्रुटि में उस भाग का पन्ना पुस्तक लाने पर या सूचित करने पर बदल कर दे दिया जाएगा। किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर ही होगा।

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner

13. ब्रिटिशकालीन भरतपुर में शिक्षा (कुलीन वर्ग के विशेष संदर्भ में) 129
डॉ. मीना अम्बेश
14. अलवर रियासत में हिन्दी का विकास 137
(महाराजा जयसिंह के विशेष संदर्भ में)
हंसराज सोनी
15. अलवर के सन्त चरणदास (1703 ई.-1782 ई.) 150
डॉ. देशराज वर्मा
16. सहजोबाई : गुरूभक्ति और ज्ञान योग 167
मीनाक्षी श्रीवास्तव
17. भर्तृहरि और उनके मुक्तक काव्य 176
डॉ. पुष्पा
18. ब्रज-मेवाती की कृषि सम्बन्धी लोकोक्ति-कहावतें: अंतर्सम्बन्ध 185
डॉ. छंगाराम मीना
19. पूर्वी राजस्थान के विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्र 194
डॉ. अनूप सिंह
20. पूर्वी राजस्थान की चित्रकला व लोक संस्कृति 206
डॉ. अलका कटारा
21. भरतपुर क्षेत्र से प्राप्त कुषाण एवं गुप्तकालीन शैव प्रतिमाएँ 223
डॉ. गोविन्द सिंह मीणा
22. मत्स्य क्षेत्र के संस्कृत साहित्यकार 232
डॉ. जे.सी.नारायणन
23. संस्कृत भाषा के परिप्रेक्ष्य में मेवाती बोली 244
कोमल अग्रवाल, डॉ. योगेन्द्र कुमार धामा
24. पूर्वी राजस्थान के पर्यटन स्थल 250
धीरेन्द्र कुमार, कुसुमसिंह सहारिया

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner

16

सहजोबाई : गुरुभक्ति और ज्ञान योग

मीनाक्षी श्रीवास्तव*

राजस्थान की संत परम्परा में अपनी सुध-बुध बिसरा कर कृष्ण भक्ति में लीन होने वाली मीरां बाई को कौन नहीं जानता। यदि मेवाड़ क्षेत्र में मीरा को प्रसिद्धि को प्राप्त हुई तो अलवर दिल्ली क्षेत्र में चरणदासी संप्रदाय की संत सहजोबाई का भी अपना विशिष्ट स्थान है। मीरां बाई के विषय में प्राय: यह प्रश्न उपस्थित नहीं होता है कि उसके गिरधर गोपाल के प्रति भाव का स्वरूप क्या है? किन्तु सहजोबाई का अवदान भावपूर्ण होने के साथ-साथ दार्शनिक विश्लेषण का आयाम भी प्रस्तुत करता है। वस्तुत: सम्पूर्ण चरणदासी संप्रदाय के विषय में, विद्वान आज भी इस प्रश्न पर एक मत नहीं हैं कि इस परम्परा के संत कौनसा साधना मार्ग अपनाते हैं। 'प्रथम बार सर जार्ज ग्रियर्सन ने इस संप्रदाय को वैष्णव मत बताया था। परन्तु हिन्दी साहित्य के किसी भी विद्वान ने उनके मत का समर्थन नहीं किया। प्राय: सभी, यहाँ तक कि चरणदास जी के संबंध में प्रथम बार स्वतंत्र ग्रंथ की रचना करने वाले डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित ने भी इन्हें संत या निर्गुनिया और इनके संप्रदाय को ज्ञानाश्रयी संत शाखा के अन्तर्गत माना है।"

माना जाता है कि सहजोबाई का जन्म विक्रम सम्वत् 1782 की शुक्ल तिथि तदानुसार रविवार 15 जुलाई सन् 1725 ई. को दिल्ली के परीक्षितपुर

* असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कनोरिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर

Scanned with CamScanner